ORIGINAL RESEARCH PAPER

Literature

# जयोदय महाकाव्य मे आजीविका के साधन

KEY WORDS: .

**Dr. B.L. Sethi** Professor Dr. B.L. Sethi, M. Phil., Ph. D., D.Litt., Director, Trilok Institute of Higher Studies and Research Hotel Om Tower, Church Road M.I. Road, Jaipur-302001.

**Dr. Naredera Kumar Sharma** Lecturer Seth Moti Lal PG Collage, JHUNJHUNU, Trilok Institute of Higher Studies and Research Hotel Om Tower, Church Road M.I. Road, Jaipur-302001.

**आजीविका के साधन**– जयोदय महाकाव्य में आजीविका के प्रमुख छह साधनों का निर्देश पाया जाता है। आजीविका के साधनों के अध्ययन से अवगत होता है कि जयोदय महाकाव्य के रचयिता आचार्य ज्ञानसागर ने सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिए आजीविका के साधनों का निर्देश किया है। अर्थात् आजीविका के छः साधन बताये गये है –

1. असि – सैनिक वृति
2. मसि – लिपिक वृति
3. कृषि – खेती का कार्य
4. विद्या – अध्यापन का कार्य या शास्त्रोपदेश
5. वाणिज्य – व्यापार, व्यवसाय
6. शिल्प – कला कौशल

जयोदय महाकाव्य में एक अन्य संदर्भ में गृहस्थों को षट्कर्मजीविनाम कहा गया है। यहाँ षट्कर्मजीविका अभिप्राय भी असि, मसि, आदि षट्कर्मो से ही है। जिनसेनाचार्य ने इन षट्कर्मो की परिभाषाएँ और व्याख्याएँ भी दी है।

**1.असिकर्म**[1] – असिकर्म का अभिप्राय तलवार, मुद्गर आदि अस्त्र धारणकर सेवा करने से है। वस्तुतः यह सैनिक वृत्ति है। पुलिस या सेना की नौकरी करते हुये आजीविका अर्जन करना असिवृत्ति के अन्तर्गत है। असिवृत्ति कार्य उस क्षेत्र तक ग्राह्य है जिस क्षेत्र में समाज धर्म, देश एवं राष्ट्र की रक्षा का सम्बंध रहता है। जब असिकर्म उस क्षेत्र का अतिक्रमण कर जाता है उस समय त्याज्य हो जाता है। जो सामने अस्त्र लिये हुए खड़ा है, देश को पदाक्रान्त करना चाहता है। ऐसे व्यक्ति के ऊपर शस्त्र का प्रयोग करना अनुचित नहीं माना जाता। जयोदय महाकाव्य में ''क्षत्रिया शस्त्रजीवित्वम्''का उल्लेख आया है। इस उल्लेख से यह स्पष्ट होता है कि शस्त्र धारण कर क्षत्रिय जाति के व्यक्ति आजीविका सम्पन्न करते थे। शस्त्रजीवी व्यक्तियों का समाज में वही स्थान था, जो शास्त्रजीवियों का है। रक्षा व्यवस्था क्षत्रिय के हाथ में थी, अतएव अस्त्र–शस्त्र के व्यवहार द्वारा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना असिकर्म है।

**2. मसिकर्म**–[2] मसिकर्म का तात्पर्य लिपिक कार्य से है। यह लिपिक का कार्यकर कार्यालय का संचालन करता था। जो व्यक्ति प्रशासन के किसी भी कार्य में योगदान के लिए लिपिक या गणक का काम करता वह मसिवृत्ति कहलाता था। लेखपत्र प्रस्तुत करना, प्रज्ञापना लिखना, आज्ञा लिखना आदि कार्य लेखक के माने जाते थे। संक्षेप में मसिजीवि व्यक्ति राज्यशासन में सहायता देने के लिए लेखक का कार्य सम्पन्न करता है।

**3. कृषिकर्म** – जयोदय महाकाव्य में भूकर्षण को कृषि कहा है। जमीन को जोतना, बोना कृषिकार्य है। कृषिकर्म भारत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कृषि के लिए अच्छी और उपजाऊ धरती, सिंचाई के साधन, सहज प्राप्य श्रम और बीज आवश्यक है। खेत की जमीन की मिट्टी कई प्रकार की होती थी। उपजाऊ मिट्टी कृष्ण लाल और पीत वर्ण की मानी गयी है। कृषिजीवी श्रमिक स्वयं की खेती करने के अनन्तर दूसरों के कृषिकर्म में भी सहायता प्रदान करते थे। इनके पास हल, बैल और कृषि के औजार रहते थे और बुलाये जाने पर दूसरों के खेत को बो–जोत देते थे। कृषि विद्या के विशारदों की बडी ही प्रतिष्ठा थी, जो व्यक्ति कृषि के कार्यो को सम्पादित करते थे, वे समाज में आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। कृषि कर्म को एक आवश्यक और उपयोगी जीविका का साधन माना है।

आर्थिक विकास की दृष्टि से कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि और औद्योगिक विकास दोनों एक दूसरे पर अवलम्बित है। प्रारम्भ में ये भले ही एक दूसरे के प्रतियोगी मालूम पडे, किन्तु दीर्धकाल में इनका सम्बंध एक दूसरे का अनुपूरक है। आर्थिक विकास के इतिहास का आलोकन करने पर ज्ञात होता है कि औद्योगिक विकास कृषि के द्वारा ही पुष्ट होता है।

इसमें सन्देह नहीं कि आर्थिक दृष्टि से कृषिकर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके कुछ तत्व–मिट्टी, जलवायु, धरातल, उर्वरा शक्ति आदि सापेक्षतः अपरिवर्तनीय है, पर भूमिव्यवस्था, सिंचाई, खाद आदि ऐसे तत्व है जिनमें समयानुसार परिवर्तन कर कृषि का विकास किया जा सकता है। जयोदय महाकाव्य में परिवर्तनीय साधनों में सिंचाई को बहुत महत्व दिया है।

**4. सिंचाई**

सिंचाई दो रूपों में सम्पन्न की जाती थी, अदेवमातृकाऔर देवमातृका। अदेवमातृका का तात्पर्य नदी, नहर, आदि द्वारा सिंचाई के प्रबन्ध से है। जयोदय महाकाव्य में बताया गया है कि कृषक नहर और नदी के जल से खेती को सींचते थे एक अन्य सन्दर्भ में आया है कि सिंचाई के लिए घटीयंत्र (रहट) भी व्यवहार में लाया जाता था। जो कृषक अपनी फसल को समृद्ध बनाना चाहते थे और एक ही खेत से अधिक उपज लेना चाहते थे, घटीयंत्र का व्यवहार करते थे।

**विद्याकर्म**–[3] 'विद्या शास्त्रोपयजीवने' द्वारा जयोदय महाकाव्यकार ने स्वयं ही शास्त्रवृति की ओर संकेत किया है। विद्या द्वारा आजीविका किये जाने से यह ध्वनित होता है कि कुछ व्यक्ति पठन– पाठन द्वारा आजीविका सम्पन्न करते थे। विद्या कर्म का सामान्यतः अर्थ उपाध्यायकर्म से है। शिक्षा देना एवं आवश्यक क्रियाकाण्डों का सम्पादन करना आजीविका का एक साधन था। जयोदय महाकाव्य के एक सन्दर्भ में बताया गया है कि राजा को अपने राज्य में विद्या व्यसनी और शास्त्र द्वारा आजीविका सम्पन्न करने वाले व्यक्तियों की आजीविका का ध्यान रखना चाहिए। जो राजा सेवकों को उचित आजीविका नहीं दें सकता है उस राजा का राज्य कीट–खादन से नष्ट हुए काष्ठ के समान निःसार हो जाता है अतः मसिजीवी और विद्याजीवी व्यक्तियों की आजीविका का प्रबन्ध करना आवश्यक है।

वाणिज्य कर्म– व्यापार करना वाणिज्य है। वाणिज्य का आर्थिक विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। जयोदय महाकाव्य के एक सन्दर्भ में चार विद्याओं का उल्लेख आया है ये विद्याएं आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, और दण्डनीति है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में वार्ता की व्याख्या कृषि, पशुपालन, और व्यापार के रूप में की गयी है। धान्य, पशु, हिरण्य, ताम्रादि खनिज पदार्थ की उत्पति का साधन वार्ता है। वार्ता के अभाव में आर्थिक समृद्धि सम्भव नहीं है। जहां कृषि, पशुपालन और वाणिज्य व्यवसायों की उन्नति न हो वहां देश की आर्थिक उन्नति कभी नहीं हो सकती। इसी कारण जयोदय महाकाव्य में वाणिज्य व्यवसाय के साथ पशुपालन और पशु व्यापार को महत्व दिया गया है।

**शिल्पकर्म** –[4] जयोदय महाकाव्य में 'शिल्पं स्यात्करकौशलम्' अर्थात् हस्तकौशल को शिल्पकर्म कहा है। हस्तकौशल के अन्तर्गत बढ़ई लोहार, कुम्हार, चमार, सोनार आदि की उपयोगी कलाएं तो सम्मिलित थी ही, पर चित्र खीचना, फूलपत्ते काढना आदि भी इसी श्रेणी में परिगणित थे। शिल्पकर्म को आजीविका की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में शिल्कर्म करने वाले को प्रतिवर्ष पांच सौ पण मिलता था ।शिल्पी का महत्व कई दृष्टिकोणों से बहुत अधिक है। इनके कई भेद किये गये है। अर्थशास्त्र में कारू शिल्पी को प्रतिवर्ष एक सौ बीस पण वेतन देने की बात कही गयी है।कौटिल्य अर्थशास्त्र में 'शिल्पी' शब्द की व्याख्या करते हुये स्नायक, संवाहक, अरन्तरक, रजक, मालाकार आदि को शिल्पी कहा है। उबटन बनाना, सुगन्धित पाउडर तैयार करना, चन्दनद्रव्य तैयार करना, कस्तूरी एवं कुंकुम आदि के द्वारा विभिन्न प्रकार के चूर्ण तैयार करना शिल्पियों का ही कार्य था।शिल्पी कई दृष्टियों से समाज के लिए उपयोगी समझे जाते थे।

**सन्दर्भ सूची**

1. जयोदय महाकाव्य 16/181
2. जयोदय महाकाव्य 42/152–160
3. जयोदय महाकाव्य 16/182
4. जयोदय महाकाव्य 41/139